डॉ० सुनीता कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
सोगरा कॉलेज, बिहारशरीफ
नालंदा।

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्ष - पत्र - 4

रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :

रीतिकालीन काव्य की रचना सामंती परिवेश और व्यवस्था में हुई है। इसलिए इसमें वे सारी विशेषताएँ मौजूद हैं जो किसी भी सामंती और दरबारी साहित्य में हो सकती है। इस प्रकार रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं —

1. रीति निरूपण / लक्षण ग्रंथों की प्रधानता
2. शृंगारिकता
3. आलंकारिता
4. आश्रयदाताओं की प्रशंसा
5. चमत्कार प्रदर्शन एवं बहुज्ञता
6. उद्दीपन रूप में प्रकृति का चित्रण
7. ब्रजभाषा की प्रधानता
8. भक्ति और नीति
9. मुक्तक शैली की प्रधानता
10. संकुचित जीवन दृष्टि
11. नारी के प्रति कामुक दृष्टिकोण
12. स्थूल एवं मांसल सौंदर्य का अंकन

1. **लक्षण ग्रंथों की प्रधानता :** रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्ति रीति - निरूपण या लक्षण - ग्रंथों का निर्माण है। इन

Scanned with CamScanner

कवियों ने संस्कृत के आचार्यों का अनुसरण पर लक्षण-ग्रंथों अथवा रीति ग्रंथों का निर्माण किया है। फिर भी इन्हें रीति निरूपण में विशेष सफलता नहीं मिली है। इनके ग्रंथ एक तरह से संस्कृत - ग्रंथों में दिए गए नियमों और तत्वों का हिन्दी पद्य में अनुवाद है। जिसमें मौलिकता और स्पष्टता का अभाव है। इन कवियों ने कवि धर्म कर्म की अपेक्षा कवि शिक्षक की भूमिका में नजर आते हैं। रीति निरूपण करने वाले आचार्यों के 2 भेद हैं - सर्वांग और विशिष्टांग निरूपक।

काव्यांग परिचायक कवियों का उद्देश्य काव्यांगों का परिचय देना है। इन्होंने लक्षण ग्रंथों के साथ अन्य कवियों की कविताओं का उदाहरण प्रस्तुत किया है। वहीं रीति निरूपण एवं काव्य रचना को बराबर महत्व देने वाले कवियों के ग्रंथों में लक्षण और उदाहरण, दोनों उन्हीं के द्वारा रचित है। इनके अलावा तीसरा वर्ग उन कवियों का है जिन्होंने रीति तत्व तो उनके ग्रंथों में मिलता है परंतु काव्यांगों का लक्षण उन्होंने नहीं दिया है।

2 शृंगारिकता : रीतिकाल की दूसरी बड़ी विशेषता शृंगार रस की प्रधानता है। इस काल की कविता में नखशिख और राधाकृष्ण की प्रेम लीलाओं का चित्रण व्यापक स्तर पर हुआ है। दरबारी परिवेश के फलस्वरूप नारी केवल पुरुष के रतिभाव का आलम्बन बनकर रह गई। शृंगार के दोनों पक्षों का वर्णन इस युग की कविताओं में हुआ है। शृंगार में आलंबन और उद्दीपन के बड़े ही सरस उदाहरणों का निर्माण हुआ है। संयोग चित्रण में कहीं - कहीं रति चित्रण की वजह से अश्लीलता भी दिखाई देती है,

Scanned with CamScanner

वहीं वियोग वर्णन में कवि-कर्म औपचारिक और रिवलवाड़ बन कर रह गया है। भागीरथी मिश्र ने इन कवियों के बारे में लिखा है की, 'उनका दृष्टिकोण मुख्यतः अंगपरक था, इसलिए प्रेम के उच्चतर सोपानों की ओर वे नहीं जा सके। प्रेम की अनन्यता, एकनिष्ठता, त्याग, तपश्चर्या आदि उदात्त पक्ष उनकी दृष्टि में बहुत कम आये हैं।

रीतिबद्ध कवियों के प्रेम चित्रण में जहाँ रसिकता और कामुकता दिखाई देती है वहीं दूसरी तरफ रीतिमुक्त कवियों के यहाँ प्रेम चित्रण में स्वच्छंदता, उदात्तता एवं अकृत्रिमता दिखाई देती है। रीतिमुक्त कवियों के यहाँ विरह वर्णन की प्रधानता है परंतु विरह ताप की अतिशयता एवं विरहजन्य उदात्तता नहीं दिखाई पड़ती।

3. आलंकारिता : रीतिकाल की एक अन्य प्रधान प्रवृत्ति आलंकारिकता भी है। इसका कारण राजदरबारों का विलासी वातावरण तथा ये कवि कविता को अलंकारों से सजाने को अपनी कविताओं में कि सार्थकता भी समझते थे। इस युग के कवियों सभी अलंकारों का निरूपण अपनी कविताओं में किया है। यहाँ पर कविता साधन न होकर साध्य है। अधिकतर कवियों ने अलंकारों का लक्षण उदाहरण दिए, लेकिन बहुतों ने केवल उदाहरण ही लिखे, जबकि उनके मन में लक्षण विद्यमान थे। इस युग में अलंकारों का इतना प्रयोग हुआ कि वह साधन न रहकर साध्य हो गया। इस प्रकार रीतिकालीन काव्यों में अलंकार प्रेम की वजह से इस दौड़ की कविता विकृति भी हो गया है। यह दोष रीतिकालीन कविता में प्रायः दिखाई पड़ता है। 'केशव' को इसी

Scanned with CamScanner

काल शुक्ल जी ने 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है। केशवदास अलंकार विहीन कविता को काव्य मानते ही नहीं, भले ही उसमें अन्य कितने ही गुण क्यों न विद्यमान हों।

4. आश्रयदाताओं की प्रशंसा : रीतिकालीन अधिकांश कवि दरबारी थे। राजाओं के आश्रय में रहते थे, इसलिए इन आश्रयदाताओं की प्रशंसा अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से किया है। भूषण जैसे कुछ कवि अपवाद हैं। रीति-मुक्त कवियों ने आत्माभिव्यक्ति को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है।

5. चमत्कार प्रदर्शन एवं बहुज्ञता : इस युग में कवियों ने चमत्कार प्रदर्शन के साथ बहुज्ञता का भी प्रदर्शन अपने ग्रंथों में किया है। चमत्कार प्रदर्शन के अंतर्गत विभिन्न अलंकारों के प्रयोग के साथ शब्दों की पच्ची-कारी एवं रमणीयता पर ज्यादा ध्यान दिया है, वहीं बहुज्ञता को प्रदर्शित करने के लिए साहित्येतर विषयों ज्योतिष, गणित, काव्य एवं नीतिशास्त्र आयुर्वेद जैसे विषयों को भी अपने काव्य का माध्यम बनाया है।

6. उद्दीपन रूप में प्रकृति का चित्रण : रीतिकाल में प्रकृति - चित्रण प्राय: उद्दीपन रूप में हुआ है। प्रकृति का स्वतंत्र और आलम्बन रूप में चित्रण बहुत कम हुआ है। दरबारी कवि जिनका आकर्षण केन्द्र नारी थी इसलिए इन कवियों का ध्यान प्रकृति के स्वतंत्र

Scanned with CamScanner

स्वतंत्र रूप से ओर नहीं गया है। प्रकृति के उद्दीपन रूप का चित्रण भी परम्परागत है। नायक - नायिका भेद में मानसिक दशा के अनुरूप प्रकृति भी संयोग और में सुखद एवं वियोग में दुखद रूप में चित्रित हुई है। सेनापति और पद्माकर जैसे कवि इसके अपवाद हैं। क्योंकि सेनापति और पद्माकर के यहाँ वर्षा एवं वसंत ऋतु का आकर्षक वर्णन हुआ है।

4. ब्रजभाषा की प्रधानता : रीतिकाल ब्रजभाषा का स्वर्ण युग रहा है। जहाँ भक्तिकाल में भाषा कृष्ण-भक्ति कवियों तक सीमित थी वहीं इस काल तक आते-आते पूर्ण रूप से काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गई। इसके बाद ब्रजभाषा में लगभग 200 वर्षों तक हिन्दी कविता कर पाई रही। ब्रज भाषा के प्रभाव का अंदाजा आप इस तरह लगा सकते हैं कि इसमें ब्रज के बाहर के कवियों ने भी इसी को अपना काव्य भाषा बनाया। इस युग की कविताओं में आप फारसी के प्रभाव भी देख सकते हैं, इसकी वजह उस समय के दरबारी जीवन जैसी सत्ता पर मुसलमान शासकों का आसीन होना प्रमुख वजह है।

8. भक्ति और नीति : रीतिकाल में भले ही रीति निरूपण शृंगार और अलंकार की प्रधानता हो, व्यापक मात्रा में भक्ति और नीति से संबंधित पद भी मिल जाते हैं जो इस युग की एक नई देन है। राधा - कृष्ण लीलाओं में शृंगारिकता के साथ-2 भक्तिभावना भी होत

Scanned with CamScanner

नहीं है। दरबारी वातावरण के परिणाम स्वरूप इनके कवि-ताओं में नीति संबंधी उक्तियाँ भी मिल जाती है। इस क्षेत्र में वृन्द के नीति दोहे, गिरधर की कुंडलियाँ तथा दीनदयाल गिरि की अन्योक्तियाँ उल्लेखनीय हैं।

9. मुक्तक शैली की प्रधानता : इस काल में कुछ प्रबंध काव्य जरूर लिखे गये हैं परंतु मुक्तक-काव्य रूप को प्रधानता मिली है। दरबारी वातावरण में मुक्तक रचनाएँ ही ज्यादा उपयुक्त थीं। इसका कारण था कि राजाओं-सामंतों के पास प्रबंधकाव्य सुनने का न तो समय था न ही धैर्य। इस काल में कवित्त में वीर और शृंगार रसों का प्रयोग तथा सवैयों में शृंगार रस का प्रयोग हुआ है। बिहारी जैसे कवियों ने दोहा छंद के सीमित शब्दों में अधिक अर्थ व्यक्त करने की कला को विकसित किया।

10. संकुचित जीवन दृष्टि : रीतिकाल के कवियों की कविताओं में कोई महान या उच्च उद्देश्य नहीं दिखाई देता है, अधिकतर कवियों ने अपने आश्रयदाताओं को खुश करने के मकसद से शृंगार और मनोरंजन पूर्ण काव्य की रचना की। रीतिकालीन काव्यों में उत्तम काव्य रचना के लिए जीवन के प्रति जिस व्यापक दृष्टिकोण की अपेक्षा की जाती है उसका नितांत अभाव दिखाई देता है। दरबारी परिवेश और विलासिता पूर्ण जीवन की वजह से इनकी दृष्टि संकुचित और जीवन के विविध पहलू छूट गये।

Scanned with CamScanner

11. नारी के प्रति कामुक दृष्टिकोण :

रीतिकालीन कवियों के यहाँ नायिका के नख-शिख वर्णन व्यापक पैमाने पर हुआ है। नारी के बाह्यरूप, स्थूल एवं मांसल चित्रण में उनकी वृत्ति अधिक रमी है। यह परिवेश ही ऐसा था जहाँ स्त्री-भोग-विलास की वस्तु समझी जाती थी, ~~किन्तु~~ कामुक दृष्टि से देखा जाता था। इसीलिए ~~स्त्री~~ स्त्रियों के दूसरे महत्त्वपूर्ण पहलू छूट गये हैं और इन कवियों की दृष्टि एकांगी हो गई। हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, "यहाँ नारी कोई व्यक्ति या समाज के संगठन की इकाई नहीं है, बल्कि सब प्रकार की विशेषताओं के बंधन से यथासंभव मुक्त विलास का एक उपकरण मात्र है।"

12. स्थूल एवं मांसल सौंदर्य का अंकन :

रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध कवियों के यहाँ स्थूल एवं मांसल सौंदर्य का वर्णन हुआ है लेकिन रीतिमुक्त कवियों के यहाँ सूक्ष्म ~~एवं~~ सौंदर्य एवं मनोरम वर्णन परिलक्षित होता है।

—— x —— x ——

Scanned with CamScanner

डॉ० सुनीता कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
सोगरा कॉलेज, बिहारशरीफ, नालंदा

हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम खंड - प्रथम पत्र

पद्मावत - मानसरोदक खंड - भाग - 1

" एक दिवस पून्यो तिथि आई । मानसरोदक चली नहाई ॥
पदमावति सब सखी बुलाई । जनु फुलवारि सबै चलि आई ॥
कोई चंपा कोइ कुंद सहेली । कोइ सु केत, करना, रस बेली ॥
कोई सु गुलाल सुदरसन राती । कोई सो बकावरि - बकुचन भाँती ॥
कोइ सो मौलसिरि, पुहुपावती, कोइ जाही जूही सेवती ॥
कोई सोनजरद कोई केसर । कोइ सिंगार - हार नागेसर ॥
कोई कूजा सदबर्ग चमेली । कोई कदम सुरस रस - बेली ॥

चलीं सबै मालती सँग फूली कवँल कुमोद ।
बेधि रहे गन गंधरब बास - परमदामोद ॥ 1 ॥

अर्थ : एक दिन पूर्णिमा की तिथि को पद्मावती मानसरोदक (मानसरोवर) में स्नान के लिए गई। उसने अपनी सभी सखियों को भी आमंत्रित किया और वे सारी विभिन्न फूलों की वाटिका के समान चली आईं। कोई सखी चंपा के फूल के समान है तो कोई कुंद की तरह, कोई केतकी, कोई करना तो कोई रसबेलि के समान है, कोई लाल गुलाल के समान सुंदर दिखनेवाली है तो कोई गुलबकावली के गुच्छे के समान हँसती हुई, कोई मौलश्री के समान है तो कोई जूही और कोई श्वेत पुष्प के समान, कोई सोने के समान पीला तो कोई केसर के समान, कोई हरसिंगार की भाँति तो कोई नागकेसर जैसी। ये सभी सखियाँ मालती जैसी पद्मावती के साथ इस प्रकार चलीं, जैसे कमल के साथ कुमुदिनियों का समूह हो। उनकी सुगंध से भौंरों के समूह भी बिंध रहे थे।

खेलत मानसरोवर गई। जाइ पाल पर ठाढ़ी भई॥
देखि सरोवर हँसैं कुलेली। पदमावति सौं कहहिं सहेली
ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी॥
जौ लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू॥
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरवर-पाली॥
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा॥
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारुन ससुर न निसरै देहीं॥
पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह॥2॥

अर्थ : खेलती-कूदती वे मानसरोदक (मानसरोवर) तक पहुँची और उसके तट पर खड़ी हो मानसरोदक की सुंदरता देखकर सखियां प्रसन्न होकर कुलेल करने लगी, इठलाने लगी। तभी एक सहेली पदमावती से कहने लगी – हे पदमावती, मन में विचार कर देखो यहां पिता के घर चार दिन ही रहना है, जब तक पिता के घर है, तब तक जो भी हँसना खेलना है खेल ले, जब ससुराल चले जाएंगे तब कहां हम और कहां यह सरोवर तट। फिर यहां आना और साथ खेलना अपने हाथ में कहां? सास और ननद ताने दे-देकर प्राण ले लेगी। कठोर ससुर घर से निकलने नहीं देगा। पति का प्यार इन सबसे ऊपर होता है। वो भी पता नहीं कैसा व्यवहार करेगा। सुख से रखेगा या दुःख से पता नहीं जीवन का कैसे निबाह होगा।

"मिलहिं रहसि सब चढ़हिं हिंडोरी। झूलि लेहिं सुख बारी भोरी॥
कित झूलि लेहु नैहर जब आई। फिरि नाहिं झूलन देइहिं जाई॥

पुनि सासुर लेइ राखहिं तहाँ। नैहर चाह न पाउब जहाँ॥
कित यह धूप, कहाँ यह छाँहा। रहब सखी बिनु मंदिर माहाँ॥
गुन पूछहि औ लाइहि दोखू। कौन उतर पाउब तहँ मोखू॥
सासु ननद के भौंह सिकोरे। रहब सँकोचि दुवौ कर जोरे॥
कित यह रहसि जो आउब करना। ससुरेइ अंत जनम गँवना॥
कित नैहर पुनि आउब, कित ससुरे यह खेल।
आपु आपु कहँ होइहिं परब पंखि जस डेल॥३॥

अर्थ: मिलकर सब हिंडोले पर झूलें और इसका लुत्फ उठायें। हे भोली, अभी सुख का समय है, जब तक मायके में हैं तब तक झूला झूल लें। फिर पति झूलने नहीं देगा। ससुर ससुराल में रख लेगा। और हमसब चाह कर भी मायके नहीं आ पाएंगी। ससुराल की धूप में यह छाँह नहीं मिलेगी, वहाँ सखियों के बिना महल में अकेले रहना होगा। सास-ननद भौंह सिकोड़ेंगी और संकोच में दोनों हाथ जोड़कर रहना होगा। यहाँ से जाने के बाद ससुराल में ही आजीवन रहना होगा। न तो मायके वापस आना होगा और न ससुराल में यह हँसी-खेल के मौके मिलेंगे, पक्षियों की तरह बिछड़ने के बाद हम पता नहीं कहाँ होंगे।

"सरवर तीर पदमिनी आई। खोंपा छोरि केस मुकलाई॥
ससि-मुख, अंग मलयगिरि बासा। नागिन झाँपि लीन्ह चहुँ पासा॥
ओनई घटा परी जग छाँहा। ससि के सरन लीन्ह जनु राहाँ॥
छपि गै दिनहिं भानु कै दसा। लेइ निसि नखत चाँद परगसा॥
भूलि चकोर दीठि मुख लावा। मेघघटा महँ चंद देखावा॥
दसन दामिनी, कोकिल भाखी। भौंहैं धनुख गगन लेइ राखी॥
नैन-खंजन दुइ केलि करेहीं। कुच-नारँग मधुकर रस लेहीं॥

Scanned with CamScanner

सरवर रूप बिमोहा, हिये होलोरहि ~~लेई~~ लेइ।
पाँव छुवै मकु पावौं एहि मिस लहरहि देइ ॥५॥

अर्थ : पद्मावती मानसरोदक (मानसरोवर) के किनारे आई और अपने जूड़े को खोलकर बालों को बिखरा दिया। पद्मावती का चंद्रमा के समान मुख उसके मलयगिरी समान सुंदर-सुडौल देह पर सुशोभित हो रहा है। अंगों से मलयगिरी के चंदन की सुगंध आ रही है। मुख पर बिखरे हुए बाल यूं प्रतीत हो रहे हैं, जैसे नागिन ने चंदन की सुगंध से आकर्षित होकर उसे चारों ओर से घेर लिया हो। वे केश मेघों के समान ऐसे छा गए कि सम्पूर्ण संसार में छाया हो गई। मुख रूपी चंद्र के चारों ओर काले केश ऐसे लग रहे हैं, जैसे राहु चन्द्रमा की शरण में आ गया है। पद्मावती के सौन्दर्य ने सूर्य को दिन में ही छिपने को विवश कर दिया और चन्द्रमा (पद्मावती का मुख) तारों के साथ प्रकट हो गया। चकोर भी केशों से घिरे पद्मावती के मुख देखकर यह सोचने लगा कि बादलों के बीच चाँद निकल आया है, और सब कुछ भूल कर उसे देखने लगा। पद्मावती की दंत-पंक्तियाँ बिजली के समान चमक रही हैं और वाणी कोयल के समान मधुर है। उसकी भौंहें तो मानो आकाश से इन्द्रधनुष लेकर बनाई गई हों। उसकी आँखें परस्पर क्रीड़ा करते हो खंजन पक्षियों की तरह हैं। उसके स्तन नारंगी के समान पुष्ट हैं और इन स्तनों के अग्रभाग श्यामल हैं ऐसा लगता है, जैसे काले भौंरे नारंगी के ऊपर बैठे उसका रसपान कर रहे हैं।

इस प्रकार पद्मावती के सौंदर्य को देखकर सरोवर का हृदय भी हिलोरें लेने लगा और उसके पाँवों को स्पर्श करने के लिए अपनी लहरें उसकी ओर बढ़ाने लगा।

— x — x —

Scanned with CamScanner